पहियों को हमेशा गतिमान रखने वाला लौह मानव

करीब छह फुट ऊँचा लौह मानव, जिसके शरीर के विभिन्न हिस्से भारी मशीनरी के पुर्जों के इस्तेमाल से बनाये गये हैं, जो अपने हाथों से सर के ऊपर भारी पहियों का वजन उठाए, अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है।

दि. 5 जनवरी 1928 को 700 विशिष्ट गणमान्यों की उपस्थिति में तत्कालीन गवर्नर 'सर लेस्ली विल्सन' द्वारा मुंबई में चली पहली उपनगरीय विद्युत ट्रेन का उद्घाटन किया गया था। तब से प्रत्येक वर्ष 5 जनवरी को उपनगरीय गाड़ी दिवस के रूप में मनाया जाता है। पश्चिम रेलवे के विद्युतीकरण की 85 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में शक्ति एवं युक्ति को दर्शाता यह लौह मानव कारखाने को समर्पित किया गया। वजनी लोहे के पहियों को उठाए लौह मानव, यह प्रतीक है भारी कार्यक्षमता वाले वर्कशॉप का, जो सक्षम है कई तरह की चुनौतियों से निपटने के लिए।

इस लौह मानव को बनाने की संकल्पना महालक्ष्मी यूनिट के सीनियर सेक्शन इंजीनियर

श्री संजय पवार के मार्गदर्शन में श्री गणेश लक्ष्मण आम्बेकर, श्री श्यामकांत वनमाली एवं अरविंद राय इन तीन कर्मचारियों ने तैयार की तथा मात्र दस दिन के भोजन अवकाश के समय में इस कृति को साकार किया। यह 'लौह मानव' महालक्ष्मी वर्कशॉप में पुरानी रेलवे बोगियों के स्क्रैप मेटेरियल से बनाया गया है। इसे ब्रेक बीम पट्टी, शॉक एब्जोर्बर, स्प्रिंग,लीव्हर, ब्रेकहैड, ब्रेकशू जैसी लोहे की वस्तुओं से बनाया गया है एवं इंस्पेक्शन ट्रॉली में लगने वाले पहियों को इसके हाथों में उठाया हुआ दर्शाया गया है।

102 साल पुराने इस महालक्ष्मी वर्कशॉप की नींव 1910 में 'बी बी एण्ड सी आय' ने मूलरूप से वैगन रिपेअर करने के लिए रखी थी, परंतु 1962 से ई.एम.यू के पी.ओ.एच का कार्य इस वर्कशॉप में किया जा रहा है। लौह मानव प्रतीक है परिश्रम, कार्यकुशलता और प्रगति का।

✍ पूजा संजय पवार,
कार्यालय अधीक्षक, परिवहन विभाग, वर्कशॉप